Dr. M. Kaho
Dept of Sociology
V.S.J College Rajnagar

B.A part-1
Sociology 'Hons'
paper-1
Introduction to sociology.

Question- सामाजिक प्रतिमान अथवा आदर्श नियम क्या है? सामाजिक नियंत्रण में इसकी भूमिका की विवेचना कीजिए।

Answer- सामाजिक प्रतिमान को सामाजिक आदर्श नियम अथवा सामाजिक मानदण्ड नाम से भी जाना जाता है। सामाजिक प्रतिमान उन सभी सामाजिक और सांस्कृतिक मानदण्ड को कहा जाता है जो समाज के नियमों के अनुसार व्यक्ति के व्यवहारों को प्रभावित करते हैं। सभी सामाजिक प्रतिमान समान प्रकृति के नहीं होते हैं कुछ सामाजिक प्रतिमान आदेशात्मक होते हैं जबकि कुछ निषेधात्मक। आदेशात्मक प्रतिमान व्यक्तियों को एक विशेष ढंग से व्यवहार करने का निर्देश देते हैं जबकि निषेधात्मक प्रतिमान व्यक्तियों को कुछ विशेष व्यवहार करने से रोकते हैं।

समाजशास्त्र में सामाजिक प्रतिमान के अध्ययन का विशेष महत्व है क्योंकि ये सामाजिक सम्बन्धों को नियमित करते हैं और सामाजिक व्यवस्था को स्थायित्व प्रदान करते हैं। सामाजिक प्रतिमानों के अध्ययन के द्वारा किसी व्यवस्था का ज्ञान प्राप्त करते हैं। सामाजिक प्रतिमानों के आधार पर मानवीय व्यवहार को उचित-अनुचित ठहराया जाता है। मानव को "प्रतिमान निर्मित करने वाला प्राणी (Norm-making animal) कहा जाता है। क्योंकि सामाजिक प्रतिमान के अभाव में सामाजिक जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है। इसलिए सामाजिक जीवन को व्यवस्थित करने के लिए मानव अनेक, प्रथाएं, रीति-रिवाज, परिपाटियों, रूढ़ियों एवं कानून आदि की रचना करता है जिन्हें हम मानवनिर्मित सामाजिक प्रतिमान कहते हैं। इसलिए R. Bierstedt ने कहा है कि Without norms social life would be impossible

and there would be no order in society"

S.F Woods के अनुसार

"सामाजिक प्रतिमान का तात्पर्य उन नियमों से है जो सांस्कृतिक आधार पर मानव व्यवहारों को नियंत्रित करते हैं सामाजिक व्यवस्था को बनाये रखने में सहयोग देते हैं तथा किसी विशेष दशा में व्यक्ति के व्यवहारों का पूर्वानुमान करने में सहायक होते हैं।

R. Bierstedt के अनुसार "सामाजिक प्रतिमान एक प्रमाणित कार्य-प्रणाली है। यह किसी कार्य को करने का एक ऐसा तरीका है जो समाज द्वारा स्वीकृत होता है।"

अतएव, सामाजिक प्रतिमान व्यवहार का नियम है जिन्हें सम्पूर्ण समूह की स्वीकृति मिली होती है। जिसमें नैतिकता की भावना का समावेश रहता है जिसमें बाध्यता एवं नियंत्रित की शक्ति होती है।

सामाजिक प्रतिमानों का समाजशास्त्रीय महत्व या सामाजिक नियंत्रण में भूमिका -
(Sociological importance of social Norms or Role in social control.)

मानव सामाजिक प्रतिमान में जीवन व्यतीत करता है और प्रतिमानों के द्वारा अपना व्यवहार नियमबद्ध बनाये रखता है। सामाजिक प्रतिमान का सामाजिक जीवन - सांस्कृतिक एवं नियंत्रणात्मक भूमिका निम्न है:-

1. सामाजिक सम्बन्धों को व्यवस्थित रखना - सामाजिक प्रतिमान का एक कार्य सामाजिक संरचना को नियंत्रण द्वारा स्थायी बनाये रखना है वहीं दूसरा कार्य नियंत्रण द्वारा सामाजिक सम्बन्धों को व्यवस्थित बनाये रखने में प्रतिमान की भूमिका है

2. सामाजिक जीवन को सौरव प्रदान :- सामाजिक सौरव सामाजिक प्रतिमान की भूमिका सामाजिक महत्वपूर्ण की प्रक्रिया का अधिक सरल बनाने में विभिन्न परिस्थितियों है क्योंकि सामाजिक प्रतिमान विभिन्न परिस्थितियों एवं अवसर पर व्यवहार दिशा को प्रभावित करता है जिससे व्यक्ति और समाज के बीच एकीकरण का विस्तार होता है।

3. कर्तव्य - परायणता - सामाजिक प्रतिमान व्यक्ति में समूह के प्रतिनिष्ठा, उत्साह एवं आकांक्षाओं को जागृत करता है। लोग सामाजिक नियमों के प्रति कर्तव्य - परायणता एवं उत्तरदायी बने रहते हैं।

4. व्यक्तित्व का निर्धारण :- व्यक्ति अचेतन रूप में सामाजिक प्रतिमान का पालन करते रहते हैं तब समय पाकर प्रतिमान व्यक्तित्व का निर्धारण स्वतः करने लगता है जिससे उन में आत्म-चेतना, आत्म विश्वास और कर्तव्य पालन की भावना में वृद्धि होती है।

5 व्यवहारों और विचारों का प्रभावित - सामाजिक प्रतिमान के पालन से ही व्यक्ति को अपने बारे में दूसरे व्यक्तियों के विचार और भावनाओं का बोध होता है। प्रतिमान की अवहेलना जन-साधारण की अवहेलना माना गया है फलतः हीनता एवं तनाव से बचने के लिए प्रतिमान को व्यवहार एवं कार्यविचार में लाना पड़ता है।

6. एकीकरण का आधार - सामाजिक प्रतिमान में जनरीतियाँ, लोकाचारों, प्रथाएं, परम्पराएं, धर्म और कानून जैसे प्रतिमान द्वारा व्यवहार करना पड़ता है जिससे सामाजिक जीवन में एकीकरण का जन्म होता है।

7 समाजशास्त्रीय अध्ययन में उपयोगी -
सामाजिक प्रतिमान में सामाजिक-सांस्कृतिक वातावरण, व्यवहार का मार्ग-दर्शन इकाईयां, प्रान्तिक भावनाओं एवं शक्ति के ~~विभाजन~~ कानून जैसे इकाईयों का जानकारी मिलता है जो समाजशास्त्रीय अध्ययन के लिए भी उपयोगी है।

8. साधन - सामाजिक प्रतिमान सामाजिक नियंत्रण के लिखित और अलिखित साधन है जो मानवीय व्यवहारों को नियंत्रित एवं व्यवस्थित करते हैं व सामाजिक आवश्यकता की पूर्ति के साधन के रूप में काम करते हैं।

R. Bierstedt ने कहा है कि समाज स्वयं एक व्यवस्था है जिसका अस्तित्व सामाजिक प्रतिमानों से ही संभव हो पाता है। इस प्रकार सामाजिक प्रतिमान ही सामाजिक संगठन का निचोड़ है।